International Journal of Sanskrit Research 2020; 6(3): 101-104

International Journal of Sanskrit Research

अनन्ता

ISSN: 2394-7519
IJSR 2020; 6(3): 101-104
© 2020 IJSR
www.anantaajournal.com
Received: 22-03-2020
Accepted: 24-04-2020

डॉ. बिपिन कुमार
विषय विशेषज्ञ ज्योर्तिविज्ञान विभाग, लखनऊ विश्वविद्यालय, लखनऊ, उत्तर प्रदेश, भारत

Corresponding Author:
डॉ. बिपिन कुमार
विषय विशेषज्ञ ज्योर्तिविज्ञान विभाग, लखनऊ विश्वविद्यालय, लखनऊ, उत्तर प्रदेश, भारत

प्रमुख संस्कारों के मुहूर्त

डॉ. बिपिन कुमार

सारांश
भारतीय ज्योतिष में संस्कारों के समय निर्धारण हेतु मुहूर्त का उल्लेख किया गया है। प्राचीन वैदिक वांगमय में संस्कारों के करने की विधि वर्णित है इस शोध पत्र में गर्भाधान संस्कार, नामकरण संस्कार, अन्नप्राशन संस्कार, मुण्डन संस्कार और यज्ञोपवीत संस्कार के मुहूर्त का संकलन किया गया है मुहूर्त के निर्धारण हेतु जातक की आयु, मास, नक्षत्र तिथि, वार, योग करण और लग्न का क्रमशः उल्लेख किया गया है। इसके अतिरिक्त मुहूर्त में वर्जित ग्रहण, संक्रान्ति, जन्म नक्षत्र, जन्म तिथि, व्यतीपात आदि दूषित योग, भद्रा, श्राद्ध दिन, क्षय तिथि, वृद्धि तिथि आदि जैसे अनेक वर्ज्य विषयों का वर्णन किया गया है।

कूट शब्दः गर्भाधान, नामकरण, अन्नप्राशन, मुण्डन, यज्ञोपवीत संस्कार, वर्जित ग्रहण, संक्रान्ति, जन्म नक्षत्र, जन्म तिथि, व्यतीपात, भद्रा, श्राद्ध दिन, क्षय तिथि, वृद्धि तिथि

प्रस्तावना
काल' शुभः क्रियायोग्यो मुहूर्त इति कथ्यते'' [1]
क्रियायोग्य शुभ काल के अंश को मुहूर्त कहते है। सनातन परम्परा में किसी भी महत्वपूर्ण संस्कार या कार्य का आरम्भ शुभ मुहूर्त में किया जाता है। मुहूर्त तत्त्व के विद्धान ऋषियों ने प्रत्येक कार्य आरम्भ के लिए मुहूर्त निर्धारण हेतु पृथक–पृथक नियम बताया है। नक्षत्र, वार, तिथि, योग, करण, पक्ष, मास, अयन, ग्रहों के उदयास्त, सूर्य की संक्रान्ति, ग्रहों के ग्रहण आदि के आधार पर मुहूर्त निर्धारण होता है। नारद का मानना है कि जिस नक्षत्र में जो भी कार्य आरम्भ होता है वही उस समय का मुहूर्त होता है–

यस्मिन्नृक्षे हि यत्कर्म कथितं निखिलं च यत्। तद् दैवत्ये तन्मुहूर्ते कार्यं यात्रादिकं सदा।।

गर्भाधान मुहूर्त
सृष्टि चक्र की गतिशीलता के लिये वंशानुक्रम में गतिशीलता होनी चाहिये। वंशानुक्रम की गतिशीलता के लिये प्रजनन आवश्यक है। सनातन धर्म में इसीलिये गर्भाधान संस्कार का विधान बताया गया है । "गर्भस्य आधानं वीर्यस्थापनं स्थिरीकरणं यस्मिन् येन वा कर्मणा, तद् गर्भाधानम्" अर्थात् गर्भ का धारण, वीर्य का स्थापन– स्थिरीकरण जिस कर्म से होता है उसे गर्भाधान कहा जाता है। संस्कारों में गर्भाधान प्रथम संस्कार है। सुश्रुत ने इसके लिये पुरुष की आयु 25 वर्ष एवं स्त्री की आयु 16 वर्ष बताया है–
पंचविंशे त्तो वर्षे पुमान् नारी तु षोडशे। समत्वागतवीर्यें तौ जानीयात्कुशलोभिषक् [2]
अर्थात् जैसे खेत और बीज के उत्तम होने से उत्तम अन्न उत्पन्न होता है वैसे ही उत्तम बलवान 25 वर्षीय पुरुष और 16 वर्षीय कन्या के प्रजनन से स्वस्थ सन्तान जन्म लेती है। भारतीय ज्योतिष में गर्भाधान हेतु मुहूर्त निर्धारित किया गया है। रजोदर्शन से सम दिन– 6, 8, 10, 12, 14, 16 उत्तम पुत्र प्राप्ति हेतु तथा विषम दिन– 5, 7, 9, 11, 13, 15 दिन उत्तम कन्या प्राप्त हेतु निर्धारित किये गये हैं।

ग्राह्य नक्षत्र
स्वातौ हस्तेऽनुराधायां रोहिण्यां व श्रवत्रये। त्र्युत्तरे मृगशीर्षे च शुभाहे समरात्रिषु।
गर्भाधानं प्रशस्तं स्यातच्छस्ते चन्द्रे युगांशगे ।। [3]

अर्थात् स्वाती, हस्त, अनुराधा, रोहिणी, श्रवण, धनिष्ठा, शतभिषा, तीनो उत्तरा और मृगशिरा गर्भाधान के लिये उत्तम नक्षत्र हैं। चित्रा, पुर्नवसु, पुष्य और अश्विनी नक्षत्र गर्भाधान के लिये मध्यम नक्षत्र हैं। रजोदर्शन से समरात्रि एवं समांश में शुभ चन्द्रमा होने पर गर्भाधान श्रेष्ठ फलदायी होता है।

दशमं जन्मनक्षत्रात् कर्मनक्षत्रमुच्चयते, एकोनविंशतिश्चैव गर्भाधानकमुच्चयते। [4]

जन्म नक्षत्र से 10वां नक्षत्र कर्म नक्षत्र होता है तथा 19 वां नक्षत्र गर्भाधान संज्ञक होता है अतः मनुष्य को अपने जन्म नक्षत्र से 19वे नक्षत्र में गर्भाधान करना चाहिये।

ग्राह्य तिथिः केवल शुक्ल पक्ष की 2, 3, 5, 7, 10, 11, 12, 13, 15, तिथियां ग्राह्य है।

वार शुद्धिः सोमवार, बुध, गुरु एवं शुक्रवार शुभ हैं, जैसा कि कहा गया है–

तथैव क्रूरवारांश्च गर्भाधाने विवर्जयेत्। [5]

योग विचारः विष्कम्भ, अतिगण्ड, शूल, गण्ड, वज्र, व्यतीपात, परिघ, वैधृति, व्याघात, और हर्षण त्याज्य हैं।

करण शुद्धिः विष्टि करण (भद्रा) को छोड़कर सभी चर करण शुभ है और स्थिर करण मध्यम है।

लग्न विचारः गर्भाधान की लग्न से 1, 4, 7, 10, 9, 5 भावों में शुभ ग्रह और 3, 6, 11 भावों में पाप ग्रह होने पर तथा पुरुष राशि लग्न पुरुष ग्रह से दृष्ट हो तो गर्भाधान शुभ होता है।

ग्रहण कालः जिस दिन ग्रहण पड़ता हो, उस दिन पूरे दिन का समय वर्जित लिया गया है।

वर्ज्य विशेषः प्रातःकाल, सायंकाल, ग्रहों का संक्रान्ति काल, पितृपक्ष, श्राद्ध दिन रजोदर्शन के चार दिन गर्भाधान हेतु त्याज्य हैं।
जैसा कि मुहूर्तचिन्तामणिकार ने शुभ कार्यो हेतु वर्ज्य बताया है–

> जन्मर्क्षमासतिथयो व्यतिपातभद्रावैधृत्यमापितृदिनानि तिथिक्षयर्द्धी।
> न्यूनाधिमासकुलिकप्रहरार्द्धपात विष्कम्भवज्रघटिकात्रयमेव वर्ज्यम्।
> परिघार्धं पंचशूले षट् च गण्डातिगण्डयोः व्याघाते नव नाड्यश्च वर्ज्याः सर्वेषु कर्मसु।। [6]

अपना जन्मनक्षत्र, जन्ममास, जन्मतिथि, व्यतिपात योग, भद्रा, वैधृति योग अमावस्या तिथि, पिता और माता के श्राद्ध दिन (मृत्यु दिन), तिथि क्षय, तिथिवृद्धि, क्षयमास, अधिमास, कुलिक(गुलिक) नामक मुहूर्त, प्रहरार्ध एवं पात काल का शुभ कार्यों में परित्याग करना चाहिये। विष्कम्भ, वज्र योगों की 3–3 घटी का परित्याग करना चाहिये।
परिघ योग का आधा, शूल योग की 5 घटी, गण्ड और अतिगण्ड की 6घटी, व्याघात की 9 घटी सभी प्रकार के शुभ कार्यों में वर्जित है।

नामकरण मुहूर्त

दशम्यामुत्थाप्य ब्राह्मणान्भोजयित्वा पिता नाम करोति [7]
दशमी के उपरान्त शिशु को उठाकर ब्राह्मण को भोजन कराकर पिता नामकरण करें। काँसे की थाली में या सुन्दर तख्ती में शिशु का नाम केसर मिश्रित चन्दन या रोली से लिखें उसे पुष्प आदि से अलंकृत करें, उपस्थित लोगों को दिखाकर नाम की घोषणा करनी चाहिये।

सूतकान्ते नामकर्मविधेयं स्वकुलोचितं–नारद

जन्म के 10 दिवस तक सूतक होता है। सूतक समाप्ति के बाद 11वें, 12वें, 16वें, 19वे, 32वें दिन नामकरण करना चाहिए।
मनु का मत है कि 10वें व 12वें दिन नामकरण करना चाहिए।
पुनर्वसुद्वये हस्तत्रये मैत्रद्वये मृगे। मूलोत्तराधनिष्ठासु द्वादशैकादशे दिने ।।
अन्यत्रापि शुभे योगे वारे बुधशशांकयोः। भानोर्गुरोः स्थिरे लग्ने बालानाम कृतं शुभम्।। [8]

ग्राह्य नक्षत्रः अश्विनी, रोहिणी, मृगशिरा, पुनर्वसु, पुष्य, उ.फा, हस्त, चित्रा, स्वाती अनुराधा, ज्येष्ठा, उ.षा., मूल, उ,फा., श्रवण, धनिष्ठा, शतभिषा, उ.भा. रेवती।

ग्राह्य तिथिः 1, 2, 3, 5, 6, 7, 10, 11, 12, 13, तिथियां नामकरण हेतु उत्तम है।

वार शुद्धिः बुध, सोम, रवि और गुरुवार को नामकरण करना चाहिये।

योग विचारः विष्कम्भ, अतिगण्ड, शूल, गण्ड, वज्र, व्यतीपात, परिघ, वैधृति, व्याघात, और हर्षण त्याज्य हैं।

करण शुद्धिः विष्टि करण (भद्रा) को छोड़कर सभी चर करण शुभ है और स्थिर करण मध्यम है।

वर्जित कालः होलाष्टक, पितृपक्ष, मलमास, मध्यम दोषपूर्ण है। संक्रन्ति, ग्रहण, श्राद्वकाल भी निषिद्ध है।

मुहूर्त की अवधिः पूर्वाह्न में उत्तम और मध्याह्न में मध्यम है। मध्याह्न के बाद शाम व रात्रि में नामकरण नही करना चाहिए। जैसा कि कहा गया है–

पूर्वाह्नः श्रेष्ठ इत्युक्तो मध्याह्नों मध्यमः स्मृतः। अपराह्नं च रात्रिं च वर्जयेन्नामकर्मणि–वृहस्पति

लग्न विचारः स्थिर लग्न उत्तम, द्विस्वभाव लग्न मध्यम और चर लग्न त्याज्य है।
नाम भी दो प्रकार के है–1. जन्मनाम (राशिनाम) 2. पुकारनाम (व्यावहारिक नाम) जन्मनाम को गोपनीय रखा जाता है। ''जन्मनाम तु गोपयेत्'' यह जन्मनाम जन्म के समय चन्द्रमा जिस नक्षत्र के जिस चरण में होता है उसी के अक्षर से रखा जाता है। ''तदक्षरादिकं नाम यस्मिन्धिष्ण्ये तदक्षरम्''। वशिष्ठ का मत है कि नाम दो अक्षर या चार अक्षर का होना चाहिए। ''तद्द्वयक्षरं वा चतुरक्षरं वा यथेप्सितं चान्तलकारयुक्तम्। विवर्ज्य नामादिकमेव कार्यं स्फुटं वदेद्दक्षिणकर्णरन्ध्रे।।
नाम के आदि में कोई घोष वर्ण होना चाहिए, मध्य में अन्तस्थ वर्ण होना चाहिए,
और अन्त में दीर्घ या विसर्ग होना चाहिए। नाम 'कृत' प्रत्यान्त होना चाहिए तद्धितान्त नही। कन्या का नाम विषम अक्षर हो, अन्त में आकारान्त ईकारान्त हो, अथवा तद्धित प्रत्ययान्त नाम होना चाहिए। नाम उच्चारण में सुखकर, सरल, मनोहर, मंगलसूचक या देवी देवताओं के नाम का पर्याय होने चाहिए।

अन्नप्राशन मुहूर्त

षष्ठे मासेऽन्नप्राशनम् [9]

शिशु को तेजस्वी बनाने के लिये घृतयुक्त भात अथवा दही, शहद, घृत और भात साथ में मिलाकर शुभ मुहूर्त में अन्नप्राशन कराना चाहिये।

पुत्र का अन्नप्राशन 4 ,6, 8, 10, 12 मास में तथा पुत्री का अन्नप्राशन 5, 7, 9, 11 मास में करना चाहिये। यह चन्द्र बल शुभ होने पर शुक्ल पक्ष में करना चाहिये। अन्नप्राशन के पूर्व हाथ और पैर धोकर, पूर्वादि शुभ दिशाओं में मुख करके(दक्षिण के अतिरिक्त), सिर को खुला रखकर अन्न ग्रहण कराना चाहिये।

> मासे षठेऽष्टमें नुर्निगदितमशनं पंचमें सप्तमें वा
> भीरोरूज्झन्ति नन्दाहरिवसुरजनीरिक्तकाः स्वर्क्षमेके।
> सद्रदृक्कांशह्रयचान्दें ध्रुवमृदुचर भक्षिप्रभेऽजालिमीनों–
> नांगे केन्द्रत्रिकोणनन्त्यमृतिषु विमलास्विन्दुरिष्टोखिलोऽडे। [10]
> आद्यान्नप्राशने पूर्वा सार्पार्द्रा वरुणो यमः। नक्षत्राणि परित्यज्य वारौ भौमार्कनन्दनौ।।
> द्वादशी सप्तमी रिक्ता पर्व नंदास्तु वर्जिताः।लग्नेषु च झषो ग्राह्यो वृषः कन्या च मन्मथः।।
> शुक्लपक्षे शुभे योगे संग्राह्यःशुभचन्द्रमाः। मासे षष्ठेऽष्टमे पुंसां स्त्रियो मासि च पंचमे।। [11]

ग्राह्य नक्षत्रः अश्विनी, रोहिणी, मृगशिरा, पुनर्वसु, पुष्य, उ.फा., हस्त, चित्रा, मूल, उ.षा., श्रवण, धनिष्ठा, उ.भा., रेवती नक्षत्र शुभ हैं।

ग्राह्य तिथिः केवल शुक्ल पक्ष की 2, 3, 5, 8, 10, 13, 15, तिथियां ग्राह्य है।

वार शुद्धिः सोम, बुध, गुरु एवं शुक्रवार शुभ हैं।

योग विचारः विष्कम्भ, अतिगण्ड, शूल, गण्ड, वज्र, व्यतीपात, परिघ, वैधृति, व्याघात, और हर्षण त्याज्य हैं।

करण शुद्धिः विष्टि करण (भद्रा) को छोड़कर सभी चर करण शुभ है और स्थिर करण मध्यम है।

लग्न विचार–वृष, मिथुन, कन्या लग्न शुभ हैं।

ग्रहण कालः जिस दिन ग्रहण पड़ता हो, उस दिन पूरे दिन का समय वर्जित किया गया है।

विशेष वर्ज्यः जैसा कि मुहूर्तचिन्तामणिकार ने शुभ कार्यो हेतु वर्ज्य बताया है–

> जन्मर्क्षमासतिथयो व्यतिपातभद्रावैधृत्यमापितृदिनानि तिथिक्षयद्र्धी।
> न्यूनाधिमासकुलिकप्रहराद्र्धपात विष्कम्भवज्रघटिकात्रयमेव वर्ज्यम्।
> परिघार्धं पंचशूले षट् च गण्डातिगण्डयोः व्याघाते नव नाड्यश्च वर्ज्याः सर्वेषु कर्मसु।। [12]

अपना जन्मनक्षत्र, जन्ममास, जन्मतिथि, व्यतिपात योग, भद्रा, वैधृति योग अमावस्या तिथि, पिता और माता के श्राद्ध दिन (मृत्यु दिन), तिथि क्षय, तिथिवृद्धि, क्षयमास, अधिमास, कुलिक(गुलिक) नामक मुहूर्त, प्रहरार्ध एवं पात काल का शुभ कार्यों में परित्याग करना चाहिये। विष्कम्भ, वज्र योगों की 3–3 घटी का परित्याग करना चाहिये।

परिघ योग का आधा, शूल योग की 5 घटी, गण्ड और अतिगण्ड की 6घटी, व्याघात की 9 घटी सभी प्रकार के शुभ कार्यों में वर्जित है।

मुहूर्त की अवधिः सूर्योदय से मध्यान्ह तक का समय।

मुण्डन मुहूर्त

प्रथम बार शिशु के सिर के बाल छिलवाने को मुण्डन, चूड़ाकर्म, क्षौरकर्म कहा जाता है। मस्तिष्क बालों से ढका होता है। यह प्रकृति प्रदत्त चिर स्थायी टोपी है, केश मस्तिष्क पर पडने वाले बाहरी प्रभावों को रोकते हैं। जन्म जन्मान्तर के कुसंस्कारों को अथवा संकीर्ण स्वार्थ में ग्रस्त विचारों को बदलकर मानवीय आदर्श अपनाने के लिये चूड़ाकर्म संस्कार किया जाता है। पारस्करगृह्यसूत्र में शिशु के 1 वर्ष के हो जाने पर चूड़ाकर्म संस्कार का विधान उल्लिखित है–

> सांवत्सरिकस्य चूड़ाकरणम् [13]

यह बालक के जन्म से विषम वर्ष में और बालिका के जन्म से सम वर्ष में करना चाहिये। मनु का मत है कि एक वर्ष के अन्दर भी चूड़ाकरण या मुण्डन हो सकता है। उत्तरायण के सूर्य मे, माघ, फाल्गुन, वैशाख, ज्येष्ठ और आषाढ़ मास मे, कृष्ण पक्ष की दशमी तक क्षीण चन्द्रमा को त्यागकर मुण्डन कराना चाहिये। मुहूर्तगणपति का मत है कि ज्येष्ठ पुत्र का विवाह ज्येष्ठ मास में ही करना चाहिये।

> चौलं माघादिपचस्वमधुषु गदितं द्वित्रिपंचोन्मितेशब्दे
> स्वाचाराद्वा सगर्भा यदि भवति जनन्यत्र नो कार्यमेत्त्।
> साकं यत्रोपनीत्या क्रियत इह तदाऽयं निरोधो न हि
> स्या–जहादंबार्तवोऽदो व्रतमुपयमनं चाविशुद्धेः शुभार्थी।। [15]
> चूडा वर्षातृतीयात्प्रभवति विषमेऽष्टार्करिक्ताद्यषष्ठी
> पर्वोनाहे विचैत्रोदगयनसमये ज्ञेन्दुशुक्रेज्यकानाम्।
> वारे लग्नांशयोश्चावास्वभनिधनतनौ नैधने शुद्धियुक्ते।
> शाक्रोपेतैर्विमैत्रैमृदुचरलघुभैरायषट्त्रिस्थपापैः [16]

नक्षत्र विचारः अश्विनी, मृगशिरा, पुनर्वसु, पुष्य, हस्त, चित्रा, स्वाती, ज्येष्ठा, अभिजित, श्रवण, धनिष्ठा, शतभिषा, रेवती नक्षत्र शुभ हैं।

ग्राह्य तिथिः 2, 3, 5, 6, 7, 10, 11, 13 और 15 तिथियां शुभ ।

पुनर्वसुद्वयं ज्येष्ठा मृगश्च श्रवणद्वयम्। हस्तत्रये च रेवत्यां शुक्लपक्षोत्तरायणे ।।

हस्तत्रये हरिद्वन्द्वे पूर्वा च मृगपंचके । मूले पौष्णे च नक्षत्रे बुधेऽर्के गुरुशुक्रयोः।। [17]

वार शुद्धिः सोम, बुध, गुरु एवं शुक्रवार शुभ हैं।

योग विचारः विष्कम्भ, अतिगण्ड, शूल, गण्ड, वज्र, व्यतीपात, परिघ, वैधृति, व्याघात, और हर्षण त्याज्य हैं।

करण शुद्धिः विष्टि करण (भद्रा) को छोड़कर सभी चर करण शुभ है और स्थिर करण मध्यम है।

वर्जित कालः संध्याकाल, पितृपक्ष, मलमास, धुनस्थ और मीनस्थ सूर्य, दक्षिणायन काल और देवशयन काल वर्जित तथा होलाष्टक काल मध्यम है।

ग्रहण कालः जिस दिन ग्रहण पड़ता हो, उस दिन पूरे दिन का समय वर्जित लिया गया है।

विशेष वर्ज्यः मॉ के रजस्वला या गर्भिणी होने पर मुण्डन वर्जित है।

पंचमासाधिके मातुगर्भे चौल शिशोर्न सत्। पंचवर्षाधिकस्येष्टं गर्भिण्यामपि मातरि।। [18]

अर्थात् मुण्डन के समय यदि माता गर्भवाती हो तो और गर्भ 5 मास से अधिक का हो तो शिशु का मुण्डन संस्कार शुभ नही होता। इस र्पकार 5 मास का अल्प का गर्भ हो तो मुण्डन हो सकता है। यदि बालक की आयु 5 वर्षो से अधिक हो गई हो तो माता के गर्भवती होने पर भी मुण्डन हो सकता है।

मुहूर्त की अवधिः सूर्योदय से सूर्यास्त तक का समय।

लग्न विचारः वृष, मिथुन, कर्क, कन्या, धनु, मकर, कुम्भ लग्न श्रेष्ठ है।

> गोस्त्रीधनुः कुम्भमकरो मन्मथस्तथा। सौम्यवारे शुभे योगे चूड़ाकर्म स्मृतं बुधैः। [19]

यज्ञोपवीत मुहूर्त्त

> यज्ञोपवीतमसि यज्ञस्य त्वा यज्ञोपवितेनाह्यमि [20]

श्रौत स्मार्त कर्म साधन और द्विजत्व की प्राप्ति के लिए यज्ञोपवीत/उपनयन/व्रतबन्ध/जनेऊ संस्कार किया जाता है। जन्म से 5, 6, 8, 11, 16, 22 और 24वें वर्ष महूर्तचिन्तामणिकार ने यज्ञोपवीत का समय बताया है। माघ, फाल्गुन, चैत्र, वैशाख और ज्येष्ठ मास शुभ है। मकर, कुम्भ, मीन अथवा मेष के सूर्य होने पर यज्ञोपवीत करना चाहिये।

ग्राह्य नक्षत्र

पूर्वाषाढाश्विनीहस्तत्रये च श्रवणत्रये। ज्येष्ठा पूर्वे मृगे पुष्ये रेवत्यां चोत्तरात्रये।।
द्वितीयायां तृतीयायां पंचम्यां दशमीत्रये। शुक्रसौम्येन्दुगुर्वर्कवारे शुक्लदले तथा।।
लग्ने वृषे धनुःसिंहे कन्यामिथुनयोरपि। व्रतबन्धः शुभे योगे ब्रह्मक्षत्रविशाम्पतेः।। [21]
पूर्वाषाढ़ा, अश्विनी, हस्त, चित्रा, स्वाती, श्रवण, धनिष्ठा, शतभिषा, ज्येष्ठा, पूर्वाफाल्गुनी, मृगशिरा, पुष्य, रेवती, उत्तरात्रय नक्षत्रों में तथा धनु, वृष, सिंह, कन्या, मिथुन लग्नों में, शुक्ल पक्ष और शुभ योग होने पर यज्ञोपवीत संस्कार करना चाहिए। मुहूर्तगणपतिकार ने यज्ञोपवीत के लिये उत्तम एवं मध्यम नक्षत्रों का उल्लेख किया है–
हस्तत्रये मृगे पुष्ये श्रवणद्वितयेऽश्विभे, रेवत्यां च प्रशस्तं स्यात् मेखलबन्धनं वटोः। [22]
अर्थात् हस्त, चित्रा, स्वाती, मृगशिरा, पुष्य, श्रवण, धनिष्ठा, रेवती, नक्षत्र में शिशु का यज्ञोपवीत शुभ होता है।
षष्ठ्यर्केन्दुकुजे मूले पूर्वाश्लेषोत्तराशते, पुनर्वस्वनुराधार्द्रा रोहिण्यां केचिद्विप्यते। [23]
अर्थात् षष्ठी तिथि, सूर्य, सोम, मंगलवार, मूल अश्लेषा, तीनो उत्तरा शतभिषा पुनर्वसु, अनुराधा, आर्द्रा और रोहिणी नक्षत्र मध्यम हैं।

ग्राह्य तिथिः दोनों पक्षो की 2, 3, 5 तथा शुक्ल पक्ष की 10, 11, 12 तिथियां ग्राह्य है।

वार शुद्धिः मंगलवार व शनिवार को छोड़कर रवि, सोम, बुध गुरु और शुक्रवार शुभ हैं।

योग विचारः विष्कम्भ, अतिगण्ड, शूल, गण्ड, वज्र, व्यतीपात, परिघ, वैधृति, व्याघात, और हर्षण त्याज्य हैं।

करण शुद्धिः विष्टि करण (भद्रा) को छोड़कर सभी चर करण शुभ है और स्थिर करण मध्यम है।

वर्जित कालः देवशयन, होलाष्टक, पितृपक्ष, मलमास, धनुस्थ सूर्य, दक्षिणायन काल वर्जित है।

गुरू–शुक्र अस्तः गुरू शुक्र के अस्त होने के तीन दिन पूर्व और उदय होने के तीन दिन पश्चात तक का समय।

ग्रहण कालः जिस दिन ग्रहण पड़ता हो, उस दिन पूरे दिन का समय वर्जित लिया गया है।

विशेष वर्ज्यः संक्रांति, युति दोष, वेध दोष, रोगबाण दोष, सूक्ष्म क्रांतिसाम्य, सिंहस्थ गुरू सिंह नवांश में तथा नक्षत्र गंडांत।
जैसा कि मुहूर्तचिन्तामणिकार ने शुभ कार्यो हेतु वर्ज्य बताया है–

> जन्मर्क्षमासतिथयो व्यतिपातभद्रावैधृत्यमापितृदिनानि तिथिक्षयद्र्धी।
> न्यूनाधिमासकुलिकप्रहराद्र्धपात विष्कम्भवज्रघटिकात्रयमेव वर्ज्यम्।
> परिघार्धं पंचशूले षट् च गण्डातिगण्डयोः व्याघाते नव नाड्यश्च वर्ज्याः सर्वेषु कर्मसु।। [24]

अपना जन्मनक्षत्र, जन्ममास, जन्मतिथि, व्यतिपात योग, भद्रा, वैधृति योग अमावस्या तिथि, पिता और माता के श्राद्ध दिन (मृत्यु दिन), तिथि क्षय, तिथिवृद्धि, क्षयमास, अधिमास, कुलिक(गुलिक) नामक मुहूर्त, प्रहरार्ध एवं पात काल का शुभ कार्यों में परित्याग करना चाहिये। विष्कम्भ, वज्र योगों की 3–3 घटी का परित्याग करना चाहिये।
परिघ योग का आधा, शूल योग की 5 घटी, गण्ड और अतिगण्ड की 6घटी, व्याघात की 9 घटी सभी प्रकार के शुभ कार्यों में वर्जित है।

मुहूर्त की अवधिः सूर्योदय से मध्याह्न तक का समय।

मनुस्मृति के अनुसार–

> सर्वदेषे तु पूर्वाह्ने मुख्यं स्यादुपनायनं। मध्याह्नं मध्यमं प्रोक्तं अपराह्ने च गर्हितम्।।

सन्दर्भ

1. मुहूर्तदर्शन विद्यामाधवीय 1/20
2. सुश्रुत सूत्रस्थान 35/10
3. मुहूर्तगणपति संस्कार प्रकरण 12
4. अथर्ववेदीय ज्योतिष 110
5. मुहूर्तगणपति संस्कार प्रकरण 11
6. मुहूर्तचिन्तामणि शुभाशुभ प्रकरण 34 35
7. पारस्कर गृह्यसूत्र प्रथम काण्ड 17/1
8. शीघ्रबोध, द्वितीय प्रकरण–7,8
9. पारस्कर गृह्यसूत्र प्रथम काण्ड 19/1
10. मुहूर्तमार्त्तण्ड–संस्कारप्रकरण–8
11. शीघ्रबोध, द्वितीय प्रकरण–19.20,21
12. मुहूर्तचिन्तामणि शुभाशुभ प्रकरण 34 35
13. पारस्करगृह्यसूत्र द्वितीय काण्ड 1/1
14. मुहूर्तमार्त्तण्ड–संस्कारप्रकरण–10
15. मुहूर्तमार्त्तण्ड–संस्कारप्रकरण–29
16. शीघ्रबोध, द्वितीय प्रकरण–22,24
17. मुहूर्तचिन्तामणि संस्कार प्रकरण 31
18. शीघ्रबोध, द्वितीय प्रकरण–23
19. शांखायनगृह्यसूत्र 2.2.3
20. शीघ्रबोध, द्वितीय प्रकरण– 28,29,30
21. मुहूर्तगणपति संस्कार प्रकरण 100
22. मुहूर्तगणपति संस्कार प्रकरण 100
23. मुहूर्तचिन्तामणि शुभाशुभ प्रकरण 34 35